HPSC – HCS

HARYANA PUBLIC SERVICE COMMISSION

प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु

भाग – 3

भारत का इतिहास और कला एवं संस्कृति

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**HPSC-HCS (Haryana Public Service Commission – Haryana Civil Service) (प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु)"** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **हरियाणा लोक सेवा आयोग (HPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**HPSC-HCS"** भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/wdvcfu

Online Order करें - https://bit.ly/40yVhHP

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

	प्राचीन भारत का इतिहास	
क्र.सं.	अध्याय	पेज न.
1.	भारत के सांस्कृतिक आधार • सिन्धु घाटी सभ्यता • ताम्रपाषाणकालीन संस्कृतियाँ	1
2.	वैदिक काल • उत्तर वैदिक काल • छठी शताब्दी ई. पू. की श्रमण परम्परा	7
3.	धार्मिक आंदोलन और धर्म दर्शन • बौद्ध धर्म • जैन धर्म • प्रमुख धार्मिक विचारक • धर्म दर्शन • योगदर्शन • वैशेषिक दर्शन • मीमांसा दर्शन • वेदान्त	15
4.	प्राचीन भारत के कुछ प्रमुख वंश • मौर्य वंश • कुषाण वंश • सातवाहन राजवंश • गुप्त वंश • चालुक्य वंश • पल्लव वंश	32

	• चोल वंश इत्यादि	
5.	प्राचीन भारत की विभिन्न कलाएँ और वास्तुकला • सिन्धु घाटी सभ्यता से आधुनिक भारत तक की विभिन्न कलाएं • भारतीय चित्रकला • भारतीय नृत्य कलाएं	59
6.	भाषा और साहित्य का विकास • प्राचीन भारतीय साहित्य • संस्कृत, प्राकृत एवं तमिल • प्रमुख साहित्यिक रचनायें	87
	मध्यकालीन भारत	
1.	भारत पर अरब आक्रमण • मो. बिन कासिम • महमूद गजनबी • मो. गौरी	102
2.	दिल्ली सल्तनत • गुलाम वंश • खिलजी वंश • तुगलक वंश • सैयद वंश • लोदी वंश • बहमनी एवं विजयनगर साम्राज्य	105
3.	मुग़ल काल • बाबर से औरंगजेब तक	120

4.	मध्यकाल में कला एवं स्थापत्य कला • चित्रकला एवं संगीत का विकास	125
5.	भक्ति आंदोलन एवं सूफी आंदोलन के प्रमुख संत एवं सम्प्रदाय • भक्ति आंदोलन के प्रमुख संत • सूफी आंदोलन • धार्मिक एवं साहित्यिक योगदान	131
	आधुनिक भारत का इतिहास	
1.	आधुनिक भारत की घटनाएँ • भारत में यूरोपीय कम्पनियों का आगमन • बंगाल में ब्रिटिश फैक्ट्रियों की स्थापना • मुग़ल साम्राज्य का पतन • मराठा साम्राज्य • गवर्नर, गवर्नर जनरल & वायसराय एवं उनके कार्य	137
2.	राष्ट्रवाद का उदय • 1857 की क्रांति से पूर्व के विद्रोह • 1857 ई. की क्रांति • भारत में पश्चिमी शिक्षा का उदय • 19वीं तथा - 20वीं शताब्दी के दौरान सामाजिक विभिन्न नेता एवं : धार्मिक सुधार आंदोलन संस्थाएँ	158

3.	स्वतंत्रता के लिए संघर्ष एवं राष्ट्रीय आन्दोलन • राष्ट्रीय आंदोलन के उदय के कारण • कांग्रेस की स्थापना • नरमपंथी / उदारवादी चरण / उग्रवादी आंदोलन • उग्रवादी आंदोलन • गाँधी वाद • महत्वपूर्ण योगदानकर्ता	182
4.	स्वतंत्रता के बाद राष्ट्र निर्माण और पुनर्गठन • 1945 -1947 के बीच का भारत • देशी रियासतों का एकीकरण • पुर्तगाली उपनिवेशों का विलय • राज्यों का भाषायी पुनर्गठन • नेहरु युग में सांस्थानिक निर्माणविज्ञान एवं , तकनीकी का विकास	232

प्राचीन भारत का इतिहास

अध्याय – 1

भारत के सांस्कृतिक आधार

- **सिन्धु घाटी सभ्यता**

इतिहास का अध्ययन : -

इतिहास का अध्ययन करने के लिए इसको तीन भागों में विभाजित किया जाता है -

1. प्रागैतिहासिक काल
2. आद्य ऐतिहासिक काल
3. ऐतिहासिक काल

1. प्रागैतिहासिक काल -

- वह काल जिसमें कोई भी लिखित स्त्रोत नहीं मिला अर्थात् सभ्यता और संस्कृति का वह युग जिसमें मानव की उत्पत्ति मानी जाती है।
- **मानव की उत्पत्ति प्रागैतिहासिक काल** से ही हुई है।

2. आद्य ऐतिहासिक काल –

- आद्य ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसके लिखित स्त्रोत मिले लेकिन उसको पढ़ा नहीं जा सका जैसे – सिन्धु घाटी सभ्यता उसमें जो भाषा थी उसको आज तक पढ़ा नहीं गया है इसलिए इस सभ्यता को आद्य ऐतिहासिक काल की श्रेणी में रखते हैं।
- इस काल की लिपि को **सर्पिलाकार लिपि** कहते हैं क्योंकि सिन्धु घाटी सभ्यता की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी ।
- इस लिपि को गोमूत्र लिपि एवं "बूस्ट्रोफिदन" लिपि के नाम से भी जानते हैं ।
- इसी प्रकार ईरान और इराक की मेसोपोटामिया की सभ्यता इसी काल की हैं ।
- **राजस्थान में इस काल की सभ्यता में कालीबंगा** की सभ्यता देखने को मिलती है अर्थात् कालीबंगा की सभ्यता इसी काल की सभ्यता है।

3. ऐतिहासिक काल -

ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसमें लिखित स्त्रोत मिले और उनको पढ़ा भी जा सका जैसे **वैदिक काल** जिसमें वेदों की रचना हुई थी। और उनको पढ़ा भी जा सकता है।

सिन्धु घाटी सभ्यता

- यह दक्षिण एशिया की प्रथम नगरीय सभ्यता थी ।
- इस सभ्यता को सबसे पहले हड़प्पा सभ्यता नाम दिया गया क्योंकि सबसे पहले 1921 में **हड़प्पा नामक स्थल की खोज दयाराम साहनी** द्वारा की गई थी।

इस सभ्यता को निम्न अन्य नामों से भी जाना जाता है

- सैंधव सभ्यता- जॉन मार्शल के द्वारा कहा गया ।
- सिन्धु सभ्यता - मार्टियर व्हीलर के द्वारा कहा गया
- वृहतर सिन्धु सभ्यता – ए. आर-मुगल के द्वारा कहा गया
- प्रथम नगरीय क्रांति- गार्डन चाइल्ड के द्वारा कहा गया
- सरस्वती सभ्यता के द्वारा कहा गया
- मेलूहा सभ्यता के द्वारा कहा गया
- कांस्यकालीन सभ्यता के द्वारा कहा गया
- यह सभ्यता मिश्र एवं मेसोपोटामिया सभ्यताओं के समकालीन थी।
- इस सभ्यता का सर्वाधिक **फैलाव घग्घर हाकरा नदी के किनारे** है। अतः इसे सिन्धु सरस्वती सभ्यता भी कहते हैं ।
- 1902 में लॉर्ड कर्जन ने जॉन मार्शल को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का महानिदेशक बनाया।
- जॉन मार्शल को हड़प्पा व मोहनजोदड़ों की खुदाई का प्रभार सौंपा गया।
- 1921 में जॉन मार्शल के निर्देशन पर दयाराम साहनी ने हड़प्पा की खोज की।
- 1922 में **राखलदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ों** की खोज की।

सिन्धु सभ्यता की प्रजातियाँ -

- प्रोटो-आस्ट्रेलायड - सबसे पहले आयी
- भूमध्यसागरीय - मोहनजोदड़ों की कुल जनसंख्या में सर्वाधिक है ।
- मंगोलियन - मोहनजोदड़ों से प्राप्त पुजारी की मूर्ति इसी प्रजाति की है ।

- **सिन्धु सभ्यता की तिथि**

कार्बन 14 (C^{14}) - 2500 से 1750 ई.पू.

व्हिलेर - 2500-1700 ई.पू.

मार्शल - 3250-2750 ई.पू.

सभ्यता का विनाश

मैके – मार्शल
मैके – नदी में बाढ़ के कारण
मैके – एस.आर.राव

व्हीलर – गार्डन चाइल्ड
व्हीलर – बाह्य आक्रमण
व्हीलर – पिगट

जलवायु परिवर्तन – आरेल स्टाइन
जलवायु परिवर्तन – अमला नन्द घोष

प्राकृतिक आपदा - केन्यू. आर. कनेडी

इस सभ्यता का विस्तार

- इस सभ्यता का विस्तार **पाकिस्तान और भारत** में ही मिलता है।

पाकिस्तान में सिन्धु सभ्यता के स्थल

- सुत्कांगेडोर
- सोत्काकोह
- बालाकोट
- डाबर कोट

- **सुत्कांगेडोर**- इस सभ्यता का सबसे पश्चिमी स्थल है जो दाश्क नदी के किनारे अवस्थित है । इसकी खोज आरेल स्टाइन ने की थी।
- सुत्कांगेडोर को हड़प्पा के व्यापार का चौराहा भी कहते हैं।

मोहनजोदड़ों	हड़प्पा
चन्हूदड़ों	डेराइस्माइल खाँ
कोटदीजी	रहमान टेरी
आमरी	गुमला
अलीमुराद	जलीलपुर

भारत में सिन्धु सभ्यता के स्थल,

- **हरियाणा- राखीगढ़ी,** सिसवल कुणाल, बणावली, मितायल, बालू
- **पंजाब –** कोटलानिहंग खान चक्र 86 बाड़ा, संघोल, टेर माजरा रोपड़ (रूपनगर) - स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद खोजा गया पहला स्थल
- **कश्मीर** - माण्डा
  चिनाब नदी के किनारे
  सभ्यता का उत्तरी स्थल
- **राजस्थान - कालीबंगा, बालाथल**
  तरखान वाला डेरा
- **उत्तर प्रदेश**- आलमगीरपुर
  सभ्यता का पूर्वी स्थल
  - माण्डी
  - बड़गाँव
  - हलास
  - **सनौली**
- **गुजरात**
  धौलावीरा, सुरकोटड़ा, देसलपुर रंगपुर, **लोथल,** रोजदिख्खी तेलोद, नगवाड़ा, कुन्तासी, शिकारपुर, नागेश्वर, मेघम प्रभासपाटन भोगत्रार
- **महाराष्ट्र**- दैमाबाद
  सभ्यता की दक्षिणतम सीमा
  फैलाव- त्रिभुजाकार
  क्षेत्रफल- 1299600 वर्ग किलोमीटर

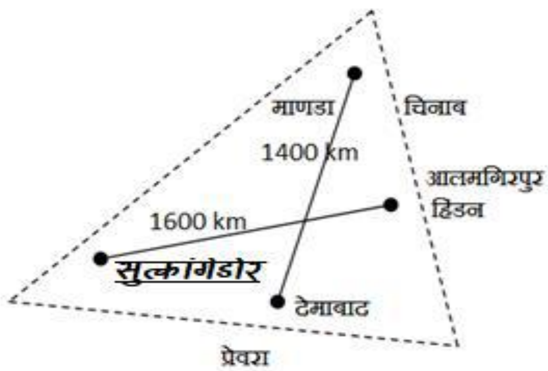

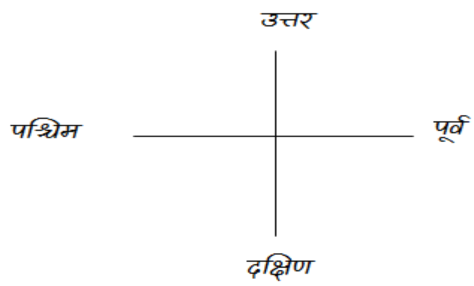

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

स्थल	नदियों के नाम	उत्खन्न का वर्ष	उत्खननकर्ता	वर्तमान स्थिति
हड़प्पा	रावी	1921	दयाराम साहनी और माधवस्वरूप वत्स	पश्चिमी पंजाब का साहिवाल जिला (पाकिस्तान)
मोहनजोदड़ों	सिन्धु	1922	राखलदास बनर्जी	सिन्ध प्रांत का लरकाना जिला (पाकिस्तान)
कालीबंगा	घग्घर	1961	बी. बी. लाल और बी. के. थापर	राजस्थान का हनुमानगढ़ जिला (भारत)
कोटदीजी	सिन्धु	1955	फजल अहमद	सिन्ध प्रांत का खैरपुर (पाकिस्तान)
रंगपुर	भादर	1953-54	रंगनाथ राव	गुजरात का काठियावाड़ क्षेत्र (भारत)
रोपड़	सतलज	1953-56	यज्ञदत्त शर्मा	पंजाब का रोपड़ जिला (भारत)
लोथल	भोगवा	1955 तथा 1962	रंगनाथ राव	गुजरात का अहमदाबाद ज़िला (भारत).
आलमगीरपुर	हिंडन	1958	यज्ञदत्त शर्मा	उत्तर प्रदेश का मेरठ जिला- (भारत)
बनावली	रंगोई	1974	रविन्द्र नाथ : विष्ट	हरियाणा का फतेहाबाद जिला (भारत)
धौलावीरा	मनहार एवं मदसार	1990-91	रविन्द्र नाथ विष्ट	गुजरात का कच्छ जिला (भारत)

- अभी तक सिन्धु सभ्यता के 2800 से अधिक स्थलों की खोज हो चुकी है।
- सिन्धु सभ्यता के 7 नगर
  - हड़प्पा
  - बनावली
  - मोहनजोदड़ों
  - धौलावीरा
  - चन्हूदड़ों
  - लोथल
  - कालीबंगा

<u>महत्वपूर्ण स्थलों की विशेषताएं</u>

- **<u>हड़प्पा</u>**

  रावी नदी के किनारे पर स्थित इस स्थल की खोज **दयाराम साहनी** ने की थी ।

  खोज- वर्ष 1921 में

<u>उत्खनन-</u>

i. 1921-24 व 1924-25 में साहनी द्वारा ।

ii. 1926-27 से 1933-34 तक माधव स्वरूप वत्स द्वारा

iii. 1996 में मार्टीयर ह्वीलर द्वारा

- हड़प्पा 5 किमी. की परिधि में फैला हुआ था जो प्रशासनिक नगर जैसा प्रतीत होता है।
- इसे 'तोरण द्वार का नगर तथा 'अर्द्ध औद्योगिक नगर' कहा जाता है।
- **पिगट ने** हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों को इस सभ्यता की **जुड़वा राजधानी** कहा है। इन दोनों के बीच की दूरी 640 किलोमीटर है ।
- 1826 में चार्ल्स मैसन ने यहाँ के एक टीले का उल्लेख किया, बाद में उसका नाम ह्वीलर ने MOUND-AB दिया।
- हड़प्पा के अन्य टीले का नाम MOUND-F है ।
- हड़प्पा से प्राप्त **कब्रिस्तान को R-37** नाम दिया।
- यहाँ से प्राप्त समाधि को HR नाम दिया ।
- हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों में पूर्व व पश्चिम में दो टीले मिलते हैं ।

  पूर्वी टीले पर नगर पश्चिमी टीले पर-दुर्ग
- हड़प्पा के अवशेषों में **दुर्ग, रक्षा प्राचीन निवासगृह चबूतरा, अन्नागार तथा ताम्बे की मानव आकृति** महत्त्वपूर्ण हैं।

प्रश्न- हड़प्पा सभ्यता की उत्पत्ति के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौनसा जोड़ा सही नहीं है?

A. ई. जे. एच. मैके - सुमेर से लोगों का पलायन

B. मार्टीमर व्हीलर - पश्चिमी एशिया से सभ्यता के विचार का प्रवसन

C. अमलानंद घोष - हड़प्पा सभ्यता का उद्भव पूर्व हड़प्पा सभ्यता की परिपक्वता से हुआ

D. एम.आर. रफीक. मुगल - हड़प्पा सभ्यताने मेसोपोटामिया सभ्यता से प्रेरणा ली।

उत्तर – D

मोहनजोदड़ों

- ***सिन्धु नदी*** के तट पर मोहनजोदड़ों की खोज सन् 1922 में ***राखलदास बनर्जी*** ने की थी।
- ***उत्खनन*** - राखलदास बनर्जी (1922-27)
- मार्शल
- जे.एच. मैके
- जे.एफ. डेल्स
- हड़प्पा सभ्यता का प्रसिद्ध पुरास्थल मोहनजोदड़ों देखने में आध्यात्मिक नगर जैसा प्रतीत होता है।
- मोहनजोदड़ों का नगर ***कच्ची ईंटों*** के चबूतरे पर निर्मित था।
- मोहनजोदड़ों सिन्धी भाषा का शब्द, अर्थ- मृतकों का टीला
- मोहनजोदड़ों को ***स्तूपों का शहर*** भी कहा जाता है।
- बताया जाता है कि यह शहर बाढ़ के कारण सात बार उजड़ा एवं बसा।
- यूनीकॉर्न प्रतीक वाले ***चाँदी के दो सिक्के*** मिले हैं ।
- ***वस्त्र निर्माण*** का प्राचीन साक्ष्य यहाँ से मिलता है। कपास के प्रमाण – मेहरगढ़
- सुमेरियन नाव वाली मुहर यहाँ से मिली है।
- मोहनजोदड़ों की सबसे बड़ी इमारत संरचना यहाँ से प्राप्त अन्नागार है । (राजकीय भण्डारागार)
- यहाँ से एक ***20 खम्भों वाला सभाभवन*** मिला है। मैके ने इसे 'बाजार' कहा है।
- बहुमंजिली इमारतों के साक्ष्य, पुरोहित आवास, पुरोहितों का विद्यालय, पुरोहित राजा की मूर्ति, कुम्भकारों की बस्ती के प्रमाण भी मोहनजोदड़ों से मिले हैं ।
- बड़ी संख्या में ***कुओं*** की प्राप्ति ।
- 8 कक्षों वाला ***विशाल स्नानागार*** भी यहीं से प्राप्त हुआ है ।

  मार्शल- आश्चर्यजनक निर्माण

कालीबंगा-

- खोज ***अमलानन्द घोष*** द्वारा ***गंगानगर*** में
- ***सरस्वती नदी*** (वर्तमान ***घग्घर*** के तट पर)
- कालीबंगा ***वर्तमान में हनुमानगढ़*** में है ।
- ***उत्खनन - बी.बी लाल*** 1953 में

  वी. के. थापड़
- कालीबंगा - काले रंग की चूड़ियाँ
- कालीबंगा - सैंधव सभ्यता की तीसरी राजधानी है।
- एक साथ ***दो फसलों की बुवाई*** तथा जालीदार जुताई के साक्ष्य मिले हैं ।
- कालीबंगा से प्राप्त दुर्ग दो भागों में बंटा हुआ- द्विभागीकरण है ।
- ***सड़कों को पक्का*** बनाने का प्रमाण कालीबंगा से प्राप्त हुआ है ।
- ***युग्म शवाधान*** का साक्ष्य शवों का अन्तिम संस्कार की तीनों विधियों के साक्ष्य यहाँ से प्राप्त हुए हैं।
- ***भूकम्प*** आने के प्राचीनतम प्रमाण यहीं से प्राप्त हुए है।
- ***वृषभ की ताम्रमूर्ति*** भी कालीबंगा से प्राप्त हुई है ।
- यहाँ से प्राप्त लेखयुक्त बर्तन से स्पष्ट होता है कि इस सभ्यता की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी।

चन्हूदड़ों-

- खोज- ***एन. जी. मजूमदार*** – सिन्धु तट पर डकैतों ने हत्या कर दी।
- उत्खनन -***मैके*** ने किया ।
- सिन्धु सभ्यता का यह ***औद्योगिक शहर*** था।
- यहाँ ***मणिकारी, मुहर बनाने, भार-माप*** के बटखड़े बनाने का काम होता था।
- सिन्धु संस्कृति के बाद विकसित झूकर- झांगर संस्कृति के अवशेष यहाँ से ही मिले।

लोथल

- ***साबरमती एव भोगवा नदी के संगम*** पर ज्यादातर हिस्सा भोगवा के तट पर
- खोज एस. आर. राव (***रंग नाथ राव***)
  - लघु हड़प्पा
  - लघु मोहनजोदड़ों की संज्ञा
- बन्दरगाह या जल भण्डार या ***गोदीबाड़ा*** यहाँ की सबसे महत्त्वपूर्ण खोज है।
- लोथल का बन्दरगाह ही सिन्धु सभ्यता की सबसे बड़ी इमारती संरचना है।
- लोथल से वृत्ताकार या चतुर्भुजाकार ***अग्निवेदी*** पाई गई है।
- लोथल का मिश्र एवं मेसोपोटामिया के साथ सीधा व्यापार होता था।
- लोथल का दुर्ग शासक का आवास था ।

- **प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न**

प्रश्न - निम्न में से कौन-कौन से सिद्धांत जैन धर्म से संबंधित है ?

A. अनेकांतवाद B. सर्वास्तिवाद
C. शून्यवाद D. स्यादवाद

नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए ।

A. 1 व 4 B. 2, 4
C. 1, 2 व 3 D. 2 व 3

उत्तर – A

प्रश्न - सुमेलित कीजिए

सूची-1 (तीर्थंकर)	सूची-2 (उनके संज्ञान)
(A) पार्श्वनाथ	(i) वृषभ
(B) आदिनाथ	(ii) सिंह
(C) महावीर	(iii) सर्प
(D) शांतिनाथ	(iv) हिरण

कूट -

	a	b	c	d
(A)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(B)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(C)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(D)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)

उत्तर – D

प्रश्न - वरकारी सम्प्रदाय की मुख्य पीठ अवस्थित है

A. श्रृंगेरी में B. पंढ़रपुर में
C. नाडियाँ में D. वाराणसी में

उत्तर- B

प्रश्न - सम्प्रदाय, जो नियति के अटलता में विश्वास करता था?

A. आजीवक B. चार्वाक
C. बौद्ध D. जैन

उत्तर – A

मुख्य परीक्षा

1. 'अर्जुन की तपस्या' प्रतिमा का संक्षिप्त विवरण दीजिए।
2. बौद्ध धर्म तथा जैन धर्म के अलावा भारत के किन्हीं दो अनीश्वरवादी धार्मिक संप्रदाय के नाम लिखिए।

अध्याय – 4

प्राचीन भारत के कुछ प्रमुख वंश

- **मौर्य वंश**

राजनीतिक इतिहास

- शासन काल चतुर्थ शताब्दी ई.पू. से द्वितीय शताब्दी ई.पू. तक (321-185 ई.पू.)
- स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा आचार्य चाणक्य (विष्णुगुप्त) के सहयोग से (मगध में)
- मौर्य शासन से पहले मगध पर नंद वंश के शासक धनानन्द का शासन था।
- मौर्य राजवंश ने लगभग 137 वर्ष तक भारत में राज किया ।
- राजधानी पाटलिपुत्र (पटना)

आचार्य चाणक्य

- जन्म तक्षशिला में (आचार्य)
- अन्य नाम विष्णुगुप्त, कौटिल्य
- चन्द्रगुप्त का प्रधानमंत्री तथा प्रधान पुरोहित आचार्य चाणक्य थे ।
- **पुराणों में चाणक्य को "द्विजर्षभ" कहा गया है जिसका मतलब है श्रेष्ठ ब्राह्मण**
- चन्द्रगुप्त मौर्य की मृत्यु के बाद भी बिन्दुसार के समय भी चाणक्य प्रधानमंत्री बना रहा (कुछ समय के लिए)
- चाणक्य तक्षशिला विश्वविद्यालय में आचार्य रहे थे।
- इन्होंने **अर्थशास्त्र नामक पुस्तक** की रचना की ।
- अर्थशास्त्र मौर्यकालीन साम्राज्य की राजव्यवस्था एवं शासन प्रणाली पर प्रकाश डालता है।
- अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण तथा 180 प्रकरण हैं ।

चन्द्रगुप्त मौर्य (321 – 298 ई.पू.)

- चन्द्रगुप्त मौर्य 321 ई.पू. धनानन्द को हरा कर मगध का शासक बना।
- इसने सिकन्दर के उत्तराधिकारी सेल्यूकस को भी हराया था।
- सेल्यूकस की पुत्री का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ हुआ।
- **उपाधियाँ** - पाटलिपुत्रक (पालिब्रोथस)
- भारत का मुक्तिदाता
- प्रथम भारतीय साम्राज्य का संस्थापक

प्रमुख तथ्य : चन्द्रगुप्त मौर्य

- बैक्ट्रिया के शासक सेल्यूकस को चन्द्रगुप्त ने पराजित कर उसकी पुत्री से विवाह किया तथा **दहेज में हेरात, कंधार, मकरान तथा काबुल प्राप्त किया।**

- सेल्यूकस ने अपने राजदूत मेगस्थनीज को चन्द्रगुप्त के दरबार में भेजा था। यूनानी लेखकों ने **पाटलिपुत्र को पालिब्रोथा के नाम से संबोधित** किया है।
- **'चन्द्रगुप्त' नाम का प्राचीनतम उल्लेख रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख** में प्राप्त हुआ है।
- जीवन के अंतिम दिनों में चन्द्रगुप्त ने **श्रवणबेलगोला में जैन विधि से उपवास पद्धति** (संलेखना पद्धति) **द्वारा प्राण त्याग दिये।**
- **चन्द्रगुप्त के समय में भूमि पर राज्य तथा कृषक दोनों का अधिकार था।**
- आय का प्रमुख स्त्रोत भूमिकर (भाग) था। संभवतः कर (Tax) उपज का 1/6 होता था।
- **मुद्रा - पंचमार्क या आहत सिक्के।**
- इसी के काल से सर्वप्रथम कला के क्षेत्र में पाषाण का प्रयोग किया गया।
- चन्द्रगुप्त जैन धर्म का अनुयायी था ।

<u>मेगस्थनीज</u>

- मेगस्थनीज सेल्यूकस 'निकेटर' का राजदूत था ।
- **इसने 'इंडिका' नामक पुस्तक की रचना की जिससे मौर्यकालीन शासन व्यवस्था की जानकारी मिलती है।**
- मेगस्थनीज भारत आने वाला प्रथम राजदूत था ।
- यूनानियों ने चन्द्रगुप्त को **सेंड्रोकोट्स** नाम दिया।
- चन्द्रगुप्त के संरक्षण में प्रथम जैन संगीति पाटलिपुत्र में हुई थी।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपना शासन अपने पुत्र बिन्दुसार को सौंप दिया था ।

<u>बिन्दुसार (298-273 ई.पू.)</u>

- चन्द्रगुप्त मौर्य की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र बिन्दुसार मौर्य साम्राज्य की गद्दी पर बैठा।
- बिन्दुसार के काल में भी चाणक्य प्रधानमंत्री था।
- बिन्दुसार आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था।
- बिन्दुसार ने एंटियोकस से मदिरा, सूखा अंजीर तथा एक दार्शनिक भेजने की मांग की थी, परन्तु एंटियोकस ने मदिरा तथा सूखे अंजीर तो भेजे लेकिन दार्शनिक नहीं भेजे।
- **अमित्रघात** अर्थात् 'शत्रुओं का वध करने वाला' बिन्दुसार की उपाधि थी। उसका अन्य नाम भद्रसार तथा सिंहसेन भी था।

<u>अशोक महान</u>

- अशोक अपने **पिता बिन्दुसार** के शासन काल में प्रान्तीय प्रशासक (उज्जयनी) के पद पर था ।
- प्राचीन भारतीय इतिहास का सर्वाधिक प्रसिद्ध सम्राट अशोक था ।
- सर्वाधिक अभिलेखीय प्रमाण इसी के काल के मिलते हैं ।
- **अभिलेखों में अशोक का नाम देवानाम प्रियदर्शी लिखा मिलता है।**
- सर्वप्रथम **मास्की लेख** में अशोक का नाम पढ़ा गया।
- अशोक महान ने श्रीनगर की स्थापना की।
- अशोक अपने प्रारम्भिक जीवन में भगवान शिव का उपासक था।

<u>कलिंग युद्ध</u>

- मगध के पड़ोस में कलिंग शक्तिशाली राज्य था।
- अपने राज्याभिषेक के आठवें वर्ष में 261 ई.पू. में अशोक ने कलिंग के साथ युद्ध किया था।
- यह सूचना अशोक के 13वें बड़े शिलालेख से मिलती है।
- कलिंग विजय के नरसंहार से सम्राट अशोक ने कभी युद्ध न करने का फैसला किया।
- अशोक महान ने अभिलेखों के माध्यम से राज्य की प्रजा को अपने संदेश पहुँचाये।
- **अभिलेखों की भाषा**
  - **प्राकृत (अधिकांश इसी भाषा में।)**
  - **यूनानी**
  - **अरामाइक**
- **अशोक के अभिलेख को सर्वप्रथम 1837 में जेम्स प्रिंसेप ने पढ़ा था।**
- अशोक के **वृहद शिलालेख** (पहाड़ियों पर) **1 से 14 तक थे।**
- अशोक के प्रथम वृहद शिलालेख में पशु हत्या को निषेध बताया है।
- इसका 12वाँ शिलालेख धार्मिक सहिष्णुता को दर्शाता है।
- अशोक बौद्ध धर्म का अनुयायी था।
- इसके शासन काल में **तृतीय बौद्ध संगीति का आयोजन पाटलिपुत्र में हुआ।**
- अशोक महान द्वारा प्रचारित की गई **नीतिगत शिक्षा को अशोक का धम्म** कहा गया।
- अशोक द्वारा धर्म प्रचार के लिए भेजे गये प्रचारक -

  सोन एवं उत्तरा- स्वर्णभूमि में

  महेन्द्र एवं संघमित्रा- श्रीलंका

  महारक्षित - यवन प्रदेश

  रक्षित - वनवासी (उ० कनाडा)
- अशोक के बाद उसके उत्तराधिकारी निर्बल तथा कमजोर हुए। उन्होंने साम्राज्य का बंटवारा कर लिया। 50 वर्षों के भीतर ही मौर्य साम्राज्य का पतन हो गया।

<u>अशोक के वृहद् शिलालेखों में उल्लेखित 14 आदर्श</u>

- प्रथम शिलालेख - खर्चीले समारोह पर प्रतिबंध, पशु-बलि निषेध, सभी मनुष्य मेरी संतान.....।
- द्वितीय शिलालेख - दक्षिण के पड़ौसी राज्यों (चोल, पांड्य, सत्तियपुत्त एवं केरलपुत्त) तथा ताम्रपर्णी का उल्लेख, कल्याणकारी कार्यों का वर्णन

- तृतीय शिलालेख युक्त, रज्जुक, प्रादेशिक महामात्य आदि की नियुक्ति का उल्लेख।
- चतुर्थ शिलालेख - 'धम्म' का उल्लेख।
- पंचम शिलालेख - धम्म महामात्रों की नियुक्ति ।
- षष्टम शिलालेख - आम जनता किसी भी वक्त राजा से मिल सकती है।
- सप्तम शिलालेख - सभी संप्रदायों में सहिष्णुता की भावना।
- अष्टम शिलालेख धम्म यात्रा आरंभ करने का उल्लेख।
- नवम शिलालेख - धम्म समारोह ।
- दशम शिलालेख- धम्म नीति सर्वश्रेष्ठ।
- ग्यारहवाँ शिलालेख धम्म नीति की व्याख्या ।
- बारहवाँ शिलालेख धार्मिक सहिष्णुता का उल्लेख।

- **तेरहवाँ शिलालेख**
- ➢ **कलिंग युद्ध का वर्णन।**
- ➢ पाँच विदेशी राजा एंटियोकस-II, टाल्मी-II, एंटिगोनस, मागस तथा अलेक्जेंडर का उल्लेख है।
- ➢ आटविक जातियों को चेतावनी ।
- ➢ चौदहवाँ शिलालेख - जनता को धार्मिक जीवन जीने की प्रेरणा।

अशोक के बाद मौर्य राज्य

पश्चिमी क्षेत्र — पूर्वी क्षेत्र

राजधानी – उज्जैन, — राजधानी - पाटलिपुत्र

- वृहद्रथ अन्तिम मौर्य शासक था ।
- 185 ई.पू. में इसके सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने वृहद्रथ की हत्या कर दी । मौर्य साम्राज्य का पतन।

केंद्र

राजा - समस्त व्यवस्था का केन्द्र बिन्दु

कार्यपालिका

विधानपालिका

न्यायपालिका

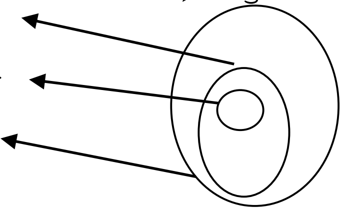

- **कौटिल्य के अनुसार राजा सप्तांग सिद्धांत का केन्द्र बिन्दु है ।**

1. दुर्ग 2. अमात्य 3. मित्र 4. राजा 5. जनपद 6. कोष 7. सेना

- मेगस्थनीज के अनुसार राजा महिला अंगरक्षकों से घिरा होता है।
- राजा में दैवीय उत्पति का सिद्धांत लागू नहीं होता था। यद्यपि अशोक ने देवानाम प्रियदर्शी की उपाधि ली थी।
- राजा-प्रजा के मध्य पिता-पुत्र का संबंध होता था।
- कौटिल्य के अनुसार दिन को 8-8 घण्टों में विभक्त करना चाहिए जिसमें राजा को 16 घण्टे काम करना चाहिए ।

नौकरशाही

नौकरशाही में 26 अध्यक्ष (विभागों के)

- ○ वेतन 1000 पण
- ○ द्वितीय श्रेणी अमात्य
- ○ सीताध्यक्ष- राजकीय भूमि का स्वामी
- ○ लक्षणाध्यक्ष- छापेखाने का अध्यक्ष

सौवर्णिक – टकसाल का प्रमुख

रुपदर्शक –सिक्के का जाँच अधिकारी

नगर प्रशासन

- विस्तृत विवरण इंडिका में
- नगर का प्रमुख नागरिक
- नगर प्रशासन के लिए 5-5 सदस्यों वाली समितियां (5x6 = 30 सदस्य)

प्रथम समिति - उद्योग-धन्धों का कार्य

द्वितीय समिति - विदेशियों की देखभाल

तृतीय समिति - जनसंख्या की गणना

चतुर्थ - व्यापार वाणिज्य को देखना

पंचम - बाजार व्यवस्था को देखना

षष्ठम् - बिक्री कर को देखना

राजस्व प्रशासन

- मौर्य सामान्य पहला केन्द्रीकृत शासन था।
- **चाणक्य के अर्थशास्त्र में 7 प्रकार के कर**

1. राष्ट्र कर - ग्रामीण क्षेत्रों से प्राप्त
2. दुर्ग कर - नगर से समिति
3. वानि कर
4. खनि कर
5. ब्रज कर – पशुओं से सम्बंधित
6. सेतु कर - फल, फूल से सम्बंधित प्राप्त आय
7. वणिकपथ कर - स्थल जलमार्ग से सम्बंधित

प्रश्न - "पंकोदक सन्निरोधे" मौर्य प्रशासन द्वारा लिया जाने वाला जुर्माना था -

A. सड़क पर कीचड़ फेंकने पर

B. कूड़ा फेंकने पर

C. मंदिर को गंदा करने पर

D. पीने के पानी को गंदा करने पर

उत्तर - A

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

भूराजस्व कर

भूमि –
- **राजकीय (सीता भूमि) - सीताकर**
- निजी भूमि पर $\frac{1}{6}$ या 16 वां हिस्सा कर के रूप में

- **प्रणय कर - संकटकालीन कर** ($\frac{1}{3}$ से $\frac{1}{4}$) तक
- **विनीता कर - चारागाह पर**
- **उद्रंग कर – सिंचाई पर**

सैन्य प्रशासन

- चाणक्य ने **चतुरंगिनी सेना** (पैदल, हाथी, घुडसवार, रथ) का उल्लेख किया ।
- सैन्य प्रशासन में समितियां थी।
- **गुल्म छावनी को कहते थे।**
- गुल्मदेय- सैनिकों का वेतन
- सेना 3 प्रकार की - राजा की सेना (मोल सेना), किराये की सेना, नगरपालिका की सेना
- तीन प्रकार के युद्ध

प्रकाश युद्ध - आमने सामने (प्रत्यक्ष)कूट युद्ध

तुष्णि युद्ध - विष देकर राजा की हत्या

गुप्तचर प्रशासन

- **गुप्तचर को गूढ पुरुष कहा गया ।**
- गुप्तचर का प्रमुख महामात्यापसर्प
- गुप्तचर स्त्री-पुरुष दोनों हो सकते थे।
- अर्थशास्त्र में दो प्रकार के गुप्तचरों का वर्णन है –
- (1) **संस्था** – जो संगठित होकर कार्य करते थे ।
- (2) **संचरा** – जो घुमक्कड़ थे । वैसे **गुप्तचर जो शत्रु राज्य से मिल जाते थे कौटिल्य ने उन्हें उभय वेतन कहा है ।**
- **पुरुष गुप्तचर** को **सान्ती तिष्णा एवं सरद** तथा **स्त्री गुप्तचर** को **वृषली भिक्षुकी** एवं **परिव्राजक** कहा जाता है।

न्याय प्रशासन

- सबसे बड़ा न्यायाधीश राजा होता था ।
- न्यायालय के दो प्रकार (दीवानी और फौजदारी) होते थे ।
- दण्ड विधान अत्यन्त कठोर था ।

अंगभंग, आर्थिक जुर्माना, मृत्युदण्ड

प्रश्न - निम्नलिखित में से कौनसा अधिकारी मौर्य प्रशासन का भाग नहीं था?

A. युक्त **B. प्रादेशिक**

C. राजुक **D. अग्रहारिक**

उत्तर – D

प्रांत

- इसका प्रमुख प्रान्तपति । कुमार आर्यपुत्र कहलाता था।
- यह पद राजा के परिवार के सदस्य को दिया जाता था।
- प्रान्त का अन्य नाम चक्र था।

अर्द्धस्वायत प्रान्त-

- गिरनार - सौराष्ट्र (चन्द्रगुप्त के समय यहाँ के प्रमुख पुष्पगुप्त वैश्य ने सुदर्शन झील बनायी)
- कम्बोज
- भोज
- पित्तनिक
- आटविक

मण्डल

- इसका प्रमुख प्रदेष्टा कहलाता था।

स्थानीय

- 800 ग्रामों का समूह

द्रोणमुख

- 400 ग्रामों का समूह

खार्वटिक

- 200 ग्रामों का समूह

संग्रहण

- 100 ग्रामों का समूह

ग्राम

- ग्राम का प्रमुख ग्रामणी

प्रश्न :- निम्नलिखित में से किस स्थल से शासक मिनेण्ड़र के सोलह सिक्के प्राप्त हुए हैं?

A. बैराठ **B. नगरी**

C. रैढ़ **D. नगर**

उत्तर – A

- **कुषाण वंश**

- मौर्योत्तरकालीन विदेशी आक्रमणकारियों में कुषाण वंश सबसे महत्त्वपूर्ण है । पल्लवों के बाद भारतीय क्षेत्र में **कुषाण आये जिन्हें युची और तोखरी भी कहा जाता है ।**
- कुषाणों ने सर्व प्रथम बैक्ट्रिया और उत्तरी अफगानिस्तान पर अपना शासन स्थापित किया । तथा वहां से शक शासकों को भगा दिया
- अन्ततं : उन्होंने सिन्धु घाटी निचले तथा गंगा के मैदान के अधिकांशं क्षेत्र पर अधिकार कर लिया ।
- **कुषाण वंश का संस्थापक कुजुल कडफिसेस** था। इसने **तांम्बे का सिक्का चलाया था** । सिक्कों के एक भाग पर

- हरिषेण का पूरा लेख **'चंपू (गद्यपद्य-मिश्रित)** शैली' का एक अनोखा उदाहरण है। इनके द्वारा रचित महाकाव्य –

शाव (वीरसेन)

- **चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य** के समय में सन्धिविग्रहिक अमात्य पद पर कार्यरत शाव की **काव्य शैली** के विषय में जानकारी **एकमात्र स्रोत 'उदयगिरि गुफा की दीवार पर उत्कीर्ण लेख है।** लेख के आधार पर यह माना जाता है कि शाव व्याकरण, न्याय एवं राजनीति का ज्ञाता एवं पाटिलिपुत्र का निवासी था।

वत्सभट्टि

इनकी काव्य शैली के विषय में जानकारी मालव संवत् के **'मंदसौर के स्तम्भ'** लेख से मिलती है। इस लेख में कुल ५५ श्लोक हैं, जिनमें पहले तीन श्लोकों में सूर्य स्तुति की गई है।

वासुल ने मंदसौर प्रशस्ति की रचना यशोधर्मन के समय में की। कुल ९ श्लोकों वाला यह लेख श्रेष्ठ काव्य का अनोखा उदाहरण है ।

कालिदास

- संस्कृत साहित्य के इस महान कवि की महत्त्वपूर्ण कृतियां हैं- ऋतुसंहार, मेघदूत, कुमारसंभव एवं रघुवंश महाकाव्य।
- कालिदास की सर्वोत्कृष्ट कृति उनका नाटक **'अभिज्ञान शाकुन्तलम्'** है। इसके अतिरिक्त उन्होंने **मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम् नाटक की भी रचना की है।**

भारवि

'किरातार्जुनीयम्' महाभारत के वनपर्व पर आधारित है इसमें कुल 18 सर्ग है।

भट्टि

इनके द्वारा रचित **'भट्टिकाव्य'** को 'रावणवध' भी कहा जाता है। **रामायण** की कथा पर आधारित इस काव्य में कुल 22 सर्ग तथा 1624 श्लोक हैं।

गुप्तकालीन नाटक एवं नाटककार

नाटक	**नाटककार**	**नाटक का विषय**
मालविकाग्निमित्रम्	**कालिदास**	अग्निमित्र एवं मालविका की प्रणय कथा पर आधारित है।
विक्रमोर्वशीयम्	**कालिदास**	सम्राट पुरुरवा एवं उर्वशी अप्सरा की प्रणय कथा पर आधारित है।
अभिज्ञानशाकुन्तलम्	**कालिदास**	दुष्यन्त तथा शकुन्तला की प्रणय कथा पर आधारित
मुद्राराक्षसम्	विशाखदत्त	इस ऐतिहासिक नाटक में चन्द्रगुप्त मौर्य के मगध के सिंहासन पर बैठने की कथा वर्णन है।
देवीचन्द्रगुप्तम	विशाखदत्त	इस ऐतिहासिक नाटक में चन्द्रगुप्त द्वारा शकराज का वध पर ध्रुव-स्वामिनी से विवाह का वर्णन है।
मृच्छकटिकम्	शूद्रक	इसमें नायक चारुदत्त, नायिका वसंतसेना, राजा, ब्राह्मण, जुआरी, व्यापारी, वैश्या, चोर, धूर्तदास का वर्णन है।
स्वप्नवासवदत्तम	भास	इसमें महाराज उदयन एवं वासवदत्ता की प्रेमकथा का वर्णन किया गया है।
प्रतिज्ञायौगंधरायणकम्	भास	महाराज उदयन के यौगंधरायण की सहायता से वासवदत्ता को उज्जयिनी से लेकर भागने का वर्णन है।
चारुदत्तम्	**भास**	इस नाटक का नायक चारुदत्त मूलतः भास की कल्पना है।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अर्थशास्त्र है। कामंदक के ग्रंथ से तत्कालीन राज्य व्यवस्था व प्रशासन की रूपरेखा प्राप्त होती है।

- हितोपदेश व पंचतंत्र की रचना भी गुप्त काल में हुई। इनमें कहानियों के माध्यम से नीति का उपदेश दिया गया है। पंचतत्र के लेखक विष्णु शर्मा है। संसार की अधिकांश भाषाओं में इस ग्रंथ का अनुवाद हो चुका है। पंचतत्र वर्तमान में भी एक लोकप्रिय ग्रंथ है।

कोश और व्याकरण-

- प्राचीन काल से ही भारत में कोश निर्माण की परम्परा चली आ रही है। यास्ककृत निघंटु और निरुक्त से वैदिक साहित्य के अध्ययन में सहायता मिलती है।
- **गुप्त काल में अमरसिंह ने अमरकोश की रचना की।** गुप्तकाल में भट्टि, भौमक आदि व्याकरण के विद्वान् थे।
- भर्तृहरि भी इसी काल में हुए। नीति, श्रृंगार और वैराग्य शतक एक महत्त्वपूर्ण रचना है। चन्द्रगोमिन ने चन्द्रव्याकरण की रचना की। इसका शैली पाणिनि की अष्टाध्यायी से पृथक् है। इसका एक अनुवाद तिब्बती भाषा में प्राप्त हुआ है।

दर्शन ग्रंथ-

- सांख्य दर्शन से संबंधित ईश्वर कृष्ण की सांख्यकारिका भी गुप्त युग की रचना है। बहुत से दार्शनिक ग्रंथों पर महाभाष्य लिखे गये हैं।
- **पतंजलि के महाभाष्य पर भी टीका लिखी गयी।** जैमिनी के पूर्व मीमांसा तथा बादरायण के उत्तरमीमांसा पर भाष्यों की रचना हुई। दिङ्नाग ने प्रमाणसमुच्चय और न्यायप्रवेश आदि ग्रंथ लिखे।
- उद्योत्तकर ने न्यायभाष्य पर न्यायवार्तिक नामक टीका लिखी। वैशेषिक दर्शन-पद्धति पर आचार्य प्रशस्तपाद ने पदार्थ धर्मसंग्रह नामक ग्रंथ लिखा है। चन्द्र ने दशपदार्थ शास्त्र की रचना की।
- **गुप्तकाल में बौद्ध धर्म की दो शाखाएँ और उनकी दो-दो उपशाखाएँ विकसित हुई।** हीनयान की शाखाएँ थीं- थेरवाद (स्थविरवाद) और वैभाषिक (सर्वास्तिवाद) और महायान की थीं-माध्यमिक और योगाचार।
- असंग जो योगाचार से सम्बद्ध वज्रछेदिका टीका, योगाचार भूमिशास्त्र नामक ग्रंथ लिखे थे। वसुबंधु ने अभिधर्मकोश की रचना की। बुद्धघोष ने विशुद्धिमग्ग नामक ग्रंथ रचा जिसमें शील, समाधि आदि की विवेचना की गयी है।
- बौद्ध ग्रंथ विनयपिटक पर समंतपासादिका टीका की रचना की गई। बुद्धघोष ने सुमंगलविलासिनी की भी रचना की। यह दीर्घनिकाय से संबंधित सुवर्णप्रमास, राष्ट्रपाल परिपृच्छा आदि बौद्ध कृतियों का भी निर्माण किया गया।
- बहुत से जैन ग्रंथ भी गुप्तकाल में लिखे गये। जैनाचार्य सिद्धसेन ने तत्त्वानुसारिणी तत्त्वार्थटीका नामक ग्रंथ की रचना की।

भारत के प्रमुख शास्त्रीय नृत्य / नर्तक

शास्त्रीय नृत्य	संबंधित राज्य	प्रमुख नर्तक
भरतनाट्यम	तमिलनाडु	यामिनी कृष्णामूर्ति, टी बाला सरस्वती, रुक्मिणी देवी, सोनल मानसिंह, मृणालिनी साराभाई, वैजयन्ती माला, हेमामालिनी
कथकली	केरल	मृणालिनी साराभाई, गुरु शंकरन, नम्बूद्रीपाद, शंकर कुरूप, के सी पणिक्कर
मोहिनीअट्टम	केरल	भारती शिवाजी, तंकमणि शांताराव
कुचिपुड़ी	आंध्रप्रदेश प्रदेश	यामिनी कृष्णमूर्ति, राधा रेड्डी, राजा रेड्डी, स्वप्न सुन्दरी
कत्थक	उत्तर प्रदेश तथा राजस्थान	बिरजू महाराज, अच्छन महाराज , गोपीकृष्ण , सितारा देवी , रोशन कुमारी , उमा शर्मा
ओडिसी	ओडिशा	प्रोतिमा देवी, संयुक्ता पाणिग्रही , सोनल मानसिंह, केलुचरण महापात्र, माधवी मुद्गल
मणिपुरी	मणिपुर	सूर्यमुखी देवी , गुरु विपिन सिंह

भारत के प्रमुख लोकनृत्य

राज्य	लोकनृत्य
असम	बिहू, खेलगोपाल , कलिगोपाल , बोई साजू , नटपूजा मीटू ।
पंजाब	कीकली, भाँगड़ा, गिद्दा
हिमाचल प्रदेश	जद्दा , नाटी , चम्बा, छपेली
हरियाणा	धमाल, खोरिया, फाग, डाहीकल
महाराष्ट्र	लेजिम, तमाशा, लावनी, कोली
जम्मू - कश्मीर	दमाली , हिकात, दण्डी नाच , राऊ , लडाखी
राजस्थान	गणगौर , झूमर , घूमर , झूलन लीला
गुजरात	गरबा, डाण्डिया रास, पणिहारी, रासलीला, लास्या, गणपति भजन

- (मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीय, अभिज्ञान शाकुन्तलम्) प्राप्त हुए हैं।

प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न-1. कितनी वेदिकाएँ 'सोहन' संस्कृति स्थल से प्राप्त हुई हैं?

A. 2

B. 3

C. 4

D. 5

उत्तर – D

प्रश्न-2. निम्नलिखित में से किस सैंधव स्थल का नगर तीन भागों (गढ़ी मध्य व निचला) नगर में विभक्त था?

A. कालीबंगा

B. सुरकोटड़ा

C. धौलावीरा

D. हड़प्पा

उत्तर – C

प्रश्न-3. सिंधु घाटी के निवासियों की सभ्यता को जानने का मूल स्रोत है वहाँ पाई गई -

A. मोहरें

B. बर्तन, जेवर, हथियार तथा औजार

C. मंदिर

D. लिपि

उत्तर – B

प्रश्न-4. जन्म से पूर्व किया जाने वाला अनुष्ठान है

A. जातकर्म B. व्रतादेश

C. समावर्तन D. सीमन्तोन्नयन

उत्तर – D

प्रश्न-5. बुद्ध की 80 फीट ऊँची प्रतिमा जो बोधगया में है, निर्मित की गई थी -

A. जापानियों द्वारा B. थाई लोगों द्वारा

B. श्रीलंकाइयों D. भूटानियों द्वारा

उत्तर – A

प्रश्न-6. निम्नलिखित अभिलेखों में से किस लेख में 'अशोक' का नाम उल्लेखित है?

A. भाब्रू अभिलेख

B. तेरहवाँ शिलालेख

C. मास्की लघु शिलालेख

D. रुम्मिनदेई स्तम्भ लेख

उत्तर – C

प्रश्न-7. कलिंग युद्ध की विजय तथा क्षतियों का वर्णन अशोक के किस शिलालेख में है?

A. शिलालेख I B. शिलालेख II

C. शिलालेख XII D. शिलालेख XIII

उत्तर – D

प्रश्न-8. मौर्ययुगीन शिल्प कला का श्रेष्ठ उदाहरण है

A. रामपुरवा का पाषाण वृषभ

B. मथुरा की वर्धमान महावीर की मूर्ति

C. विदिशा की मकरवाहिनी की मूर्ति

D. कौशांबी की सूर्य मूर्ति

उत्तर – A

प्रश्न-9. भारतीय और यूनानी कला शैली के मिश्रण से किस कला शैली की उत्पत्ति हुई?

A. अमरावती कला शैली

B. गांधार कला शैली

C. मथुरा कला शैली

D. मधुबनी कला शैली

उत्तर – B

प्रश्न-10. मंदिरों का नगर कहा जाता है?

A. एहोल

B. पट्टड़कल

C. मान्यखेट

D. वेंगी

उत्तर – A

प्रश्न-11. 'गोपुरम' किस मंदिर स्थापत्य कला शैली की विशिष्टता है?

A. द्रविड़ B. नागर

C. बेसर D. कलिंग

उत्तर – A

अलाई दरवाजा-

- इसका निर्माण कार्य **अलाउद्दीन खिलजी द्वारा 1310-1311 ई. में आरम्भ करवाया गया।** इसके निर्माण का **उद्देश्य कुव्वत मस्जिद में चार प्रवेश द्वार बनाना था** -दो पूर्व में, एक दक्षिण में और एक उत्तर में।
- इसका निर्माण ऊँची कुर्सी पर किया गया है। कुर्सी पर सुन्दर बेल-बूटे बने थे।
- दरवाजे में लाल पत्थर एवं संगमरमर का सुन्दर संयोग दिखता है, साथ ही आकर्षक ढंग से कुरान की आयतों को लिखा गया है। **इस मस्जिद में बनी एक गुम्बद में पहली बार विशुद्ध वैज्ञानिक विधि का प्रयोग किया गया है।** अलाई दरवाजा की साज-सज्जा में बौद्ध तत्वों के मिश्रण का आभास होता है। पहली बार **वास्तविक गुम्बद का स्वरूप अलाई दरवाजा में ही दिखाई देता है ।**

जमात खाँ मस्जिद -

- जमात खाँ मस्जिद का निर्माण अलाउद्दीन खिलजी ने निजामुद्दीन औलिया की दरगाह के समीप करवाया। पूर्णतः इस्लामी शैली में निर्मित इस मस्जिद में लाल पत्थर का प्रयोग किया गया है। **इसके डाटो के कोने में कमल के पुष्प से इस मस्जिद में हिन्दू शैली के प्रभाव का आभास होता है।** पूर्णरूप से इस्लामी परम्परा में निर्मित यह भारत की पहली मस्जिद है ।
- **खिलजी काल में पूर्णत निर्मित अन्य निर्माण कार्यों में कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी द्वारा भरतपुर में निर्मित 'ऊखा मस्जिद' एवं खिज्र खाँ द्वारा निर्मित निजामुद्दीन औलिया की दरगाह विशेष उल्लेखनीय हैं।**

इस काल की प्रमुख इमारतें निम्नलिखित हैं

तुगलकाबाद -

- ग्यासुद्दीन तुगलक ने दिल्ली के समीप स्थित पहाड़ियों पर **तुगलकाबाद नाम का एक नया नगर स्थापित किया । रोमन शैली में निर्मित इस नगर में एक दुर्ग का निर्माण भी हुआ है।**
- इस दुर्ग को 'छप्पन कोट' के नाम से भी जाना जाता है ।
- दुर्ग की दीवारें मिस्र के पिरामिड की तरह अन्दर की ओर झुकी हुई हैं । इसकी नींव गहरी तथा दीवारें मोटी हैं ।

ग्यासुद्दीन का मकबरा

- यह मकबरा चतुर्भुज के आकार के आधार पर स्थित है, मकबरे की ऊँचाई लगभग 81 फीट है। मकबरे में ऊपर संगमरमर का सुन्दर गुम्बद बना है, गुम्बद की छत कई डाटों पर आधारित है। मकबरे में आमलक और कलश का प्रयोग हिन्दू मंदिरों की शैली पर किया गया है।
- **लाल पत्थर से निर्मित** इस मकबरे के चारों ओर मजबूत मीनार का निर्माण किया गया है । कृत्रिम झील के अन्दर निर्मित इस मकबरे की दीवारें चौड़ी एवं मिस्र के पिरामिडों की तरह भीतर की ओर झुकी हैं ।

जहाँपनाह नगर

- मुहम्मद तुगलक ने इस नगर की स्थापना रायपिथौरा एवं सीरी के मध्य करवाई थी। **इस नगर के अवशेषों में सतपुत्र' अर्थात् सात मेहराबों का पुत्र आज भी वर्तमान में है ।**
- अवशेष के रूप में बचा 'विजय मंडल' सम्भवतः महल का एक भाग था।

कोटला फिरोजशाह

- सुल्तान फिरोज शाह तुगलक ने पाँचवी दिल्ली बसायी, जिसमें एक महल की स्थापना की । यह कोटला फिरोजशाह के नाम से विख्यात है।
- सुल्तान फिरोजशाह तुगलक ने दिल्ली में कोटला फिरोजशाह दुर्ग का निर्माण करवाया।
- दुर्ग के अन्दर निर्मित जामा मस्जिद के सामने सम्राट अशोक का टोपरा गाँव से लाया गया स्तम्भ गड़ा है । **मेरठ से लाया गया अशोक का दूसरा स्तम्भ' कुश्क-ए-शिकार' महल के सामने गड़ा है।**
- इसके साथ ही दुर्ग के अन्दर एक दो मंजिली इमारत के अवशेष प्राप्त हुए हैं, जिसका उपयोग विद्यालय के रूप में किया जाता था।

फिरोजशाह का मकबरा

यह मकबरा एक वर्गाकार इमारत है। मकबरे की दीवारों को फूल-पत्तियों एवं बेल-बूटों से सजाया गया है। मकबरे में संगमरमर का भी प्रयोग किया गया है।

सैयद कालीन वास्तुकला

- इस समय तक स्थापत्य कला का पतन आरम्भ हो चुका था। **सैयद कालीन इमारतों को खिलजी कालीन इमारतों की नकल भर माना जा सकता है।**
- मृत्युकारी परिणाम को हटा नहीं सकी। "
- इस काल में खिज्र ख़ाँ द्वारा स्थापित' खिज्राबाद एवं मुबारक शाह द्वारा स्थापित नगर' मुबारका बाद' का निर्माण हुआ।

मुहम्मद शाह का मकबरा

- इस अष्ट भुजीय मक़बरे में अत्यधिक ऊँचाई होने के दोष को दूर किया गया है। मक़बरे में कमल आदि प्रति रूपों की साज सज्जा हेतु चीनी टाइलों का उपयोग किया गया है।

लोदी काल में वास्तुकला

- लोदी काल में किये गए कुछ महत्त्वपूर्ण निर्माण कार्य निम्नलिखित हैं-

बहलोल लोदी का मकबरा

- यह मकबरा 1518 ई. में सिकन्दर शाह लोदी द्वारा बनवाया गया था।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 3

मुग़ल काल

- राजनीतिक चुनौतियाँ एवं सुलह-अफगान, राजपूत, दक्कनी राज्य और मराठा
- पानीपत के मैदान में 21 अप्रैल, 1526 को इब्राहिम लोदी और चुगताई तुर्क जलालुद्दीन बाबर के बीच युद्ध लड़ा गया, जिसमें लोदी वंश के अंतिम शासक इब्राहिम लोदी को पराजित कर खानाबदोश बाबर ने तीन शताब्दियों से सत्तारूढ़ तुर्क अफगानी सुल्तानों की - दिल्ली सल्तनत का तख्ता पलटकर रख दिया और मुग़ल साम्राज्य और मुग़ल सल्तनत की नींव रखी । **गुप्त वंश के पश्चात् मध्य भारत में केवल मुग़ल साम्राज्य ही ऐसा साम्राज्य था, जिसका एकाधिकार हुआ था।**
- **मुग़ल वंश का संस्थापक बाबर था,** अधिकतर मुग़ल शासक तुर्क और सुन्नी मुसलमान थे, **मुग़ल शासन 17 वीं शताब्दी के आखिर में और 18 वीं शताब्दी की शुरुआत तक चला और 19 वीं शताब्दी के मध्य में समाप्त हुआ ।**

बाबर का शासन काल (1526 – 1530 ई.)

- **बाबर का जन्म छोटी सी रियासत 'फरगना में 1483 ई. में हुआ था। जो फ़िलहाल उज़्बेकिस्तान का हिस्सा है।**
- बाबर अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् मात्र 11 वर्ष की आयु में ही फरगना का शासक बन गया था। **बाबर को भारत आने का निमंत्रण पंजाब के सूबेदार दौलत खाँ लोदी और इब्राहिम लोदी के चाचा आलम खाँ लोदी ने भेजा था ।**
- **पानीपत का प्रथम युद्ध 21 अप्रैल, 1526 ई. को इब्राहिम लोदी और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई।**
- **खनवा का युद्ध 17 मार्च 1527 ई. में राणा सांगा और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई ।**
- **चंदेरी का युद्ध 29 मार्च 1528 ई. में मेदिनी राय और बाबर के बीच हुआ,** जिसमें बाबर की जीत हुई ।
- **घाघरा का युद्ध 6 मई 1529 ई. में अफगानों और बाबर के बीच हुआ,** जिसमें बाबर की जीत हुई ।

नोट :- पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने पहली बार तुगलमा / तुलगमा युद्ध नीति का इस्तेमाल किया ।

- **उसकी विजय का मुख्य कारण उसका तोपखाना और कुशल सेना प्रतिनिधित्व था । भारत में तोप का सर्वप्रथम प्रयोग बाबर ने ही किया था।**
- **पानीपत के इस प्रथम युद्ध में बाबर ने उज्बेकों की 'तुलगमा युद्ध पद्धति तथा तोपों को सजाने के लिए 'उस्मानी विधि जिसे 'रूमी विधि' भी कहा जाता है, का प्रयोग किया था।**
- बाबर ने दिल्ली सल्तनत के पतन के पश्चात् उनके शासकों 'को (दिल्ली शासकों) सुल्तान' कहे जाने की परम्परा को तोड़कर **अपने आप को 'बादशाह' कहलवाना शुरू किया।**
- **पानीपत के युद्ध के बाद बाबर का दूसरा महत्त्वपूर्ण युद्ध राणा सांगा के विरुद्ध 17 मार्च, 1527 ई. में आगरा से 40 किमी दूर खानवा नामक स्थान पर हुआ था। जिसमें विजय प्राप्त करने के पश्चात् बाबर ने गाज़ी की उपाधि धारण** की थी । इस युद्ध के लिए **अपने सैनिकों का मनोबल बढ़ाने के लिये बाबर ने 'जिहाद' का नारा दिया था ।**
- साथ ही **मुसलमानों पर लगने वाले कर तमगा की समाप्ति की घोषणा की थी,** यह एक प्रकार का व्यापारिक कर था। राजपूतों के विरुद्ध इस 'खानवा के युद्ध का प्रमुख कारण बाबर द्वारा भारत में ही रुकने का निश्चय था।
- 29 जनवरी, 1528 को बाबर ने चंदेरी के शासक मेदिनी राय पर आक्रमण कर उसे पराजित किया था। यह विजय बाबर को मालवा जीतने में सहायक रही थी।
- इसके बाद बाबर ने 06 मई, 1529 में 'घाघरा का युद्ध लड़ा था। जिसमें बाबर ने बंगाल और बिहार की संयुक्त अफगान सेना को हराया था।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा 'बाबरनामा' का निर्माण किया था, जिसे तुर्की में 'तुजुक-ए- बाबरी' कहा जाता है। जिसे बाबर ने अपनी मातृभाषा चगताई तुर्की में लिखा है ।
- इसमें बाबर ने तत्कालीन भारतीय दशा का विवरण दिया है, जिसका फारसी अनुवाद अब्दुर्रहीम खानखाना ने किया है और अंग्रेजी अनुवाद श्रीमती बेबरिज द्वारा किया गया है।
- **बाबर ने अपनी आत्मकथा में 'बाबरनामा कृष्णदेव राय तत्कालीन विजयनगर के शासक को समकालीन भारत का शक्तिशाली राजा कहा है।** साथ ही पांच मुस्लिम और दो हिन्दू राजाओं मेवाड़ और विजयनगर का ही जिक्र किया है।
- बाबर ने 'रिसाल-ए-उसज' की रचना की थी, जिसे 'खत-ए बाबरी ' भी कहा जाता है। बाबर ने एक तुर्की काव्य संग्रह 'दिवान का संकलन भी करवाया था। बाबर ने 'मुबइयान' नामक पद्य शैली का विकास भी किया था।
- बाबर ने संभल और पानीपत में मस्जिद का निर्माण भी करवाया था। **साथ ही बाबर के सेनापति मीर बाकी ने अयोध्या में मंदिरों के बीच 1528 से 1529 के मध्य एक बड़ी मस्जिद का निर्माण करवाया था, जिसे बाबरी मस्जिद के नाम से जाना गया।**
- बाबर ने आगरा में एक बाग का निर्माण करवाया था, जिसे 'नर-ए-अफगान' कहा जाता था, जिसे वर्तमान में **'आरामबाग'** के नाम से जाना जाता है। इसमें **चारबाग शैली का प्रयोग किया गया है।**
- यहीं पर 26 दिसम्बर, 1530 को बाबर की मृत्यु के बाद उसको दफनाया गया था। परन्तु कुछ समय बाद बाबर के शव को उसके द्वारा ही चुने गए स्थान काबुल में दफनाया गया था।

हुमायूँ (1530 ई. - 1556 ई.)

- बाबर की मृत्यु के बाद उसका पुत्र हुमायूँ मुग़ल वंश के शासन पर बैठा ।

(2) सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन :-

- 19 वीं सदी के सामाजिक-धार्मिक सुधार ने वर्ण व्यवस्था, जाति-पाँति, छुआछुत और धार्मिक आडंबरों पर चोट कर मानव की एकता पर बल दिया तो साथ ही, प्राचीन गौरवपूर्ण परम्परा को उद्घटित कर भारतीयों के अंदर हीनता की भावना को दूर कर आत्मविश्वास और सम्मान की भावना भरी।
- इसी तरह, सुधारकों ने 'स्वराज' एवं 'स्वदेशी' पर बल दिया और विदेशी शासन को किसी भी दृष्टि से सुखदायी नहीं बताया तथा इससे मुक्त होने के लिए लोगों को प्रेरित किया। इसी क्रम में, भारत भारतीयों के लिए नारा दिया गया। फलतः राष्ट्रीय चेतना के विकास को बढ़ावा मिला।

(3) पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन :-

- पत्र-पत्रिकाओं प्रकाशन से विभिन्न क्षेत्र के बुद्धिजीवियों को उनके विचारों और समस्याओं से अवगत कराया। साथ ही, आधुनिक विचारों जैसे -स्वशासन, लोकतंत्र नागरिक अधिकार आदि को प्रचारित कर लोगों को जागरूक बनाया। इसी क्रम में, राष्ट्रीय चेतना के विकास को बढ़ावा मिला।

(4) लिटन और कर्जन की नीतियाँ :-

- लिटन की प्रतिक्रियावादी नीतियों ने भारतीयों को असंतुष्ट किया । लिटन ने देशी समाचार पत्र अधिनियम लाकर समाचार पत्रों की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाया । साथ ही, सिविल सेवा परीक्षा में उम्र सीमा में कमी कर भारतीयोंको इससे बाहर करने की योजना बनायी।
- इतना ही नहीं, अकाल के दौरान दिल्ली दरबार का आयोजन कर ब्रिटेन के शासक का सम्मान करने का कार्य किया और भारतीय धन का दुरुपयोग किया और लिख के भारतीय विरोधी नीति से असंतुष्ट होकर लोग एकत्रित हुए।
- **कर्जन ने विश्वविद्यालय अधिनियम लाकर शिक्षण संस्थान की स्वतंत्रताओं पर अंकुश लगाया और कलकत्ता नगर निगम अधिनियम लाकर सरकारी हस्तक्षेप को बढ़ाया।** तो साथ ही, बंगाल विभाजन की घोषणा की | इसी क्रम में, बंगाल विभाजन का विरोध बंगाल बाहर भी होने लगा।
- वस्तुतः स्वदेशी आंदोलन शुरू हुआ जो भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रसारित हुआ । इस तरह ब्रिटिश अधिकारियों की दमनकारी नीतियों से राष्ट्रीय चेतना का प्रसार हुआ। इन्हीं संदर्भों में यह कहा गयो कि 'कुछ बुरे शासक भी अच्छा परिणाम पैदा करते हैं।

(5) रिपन की नीतियाँ :-

- **वायसराय रिपन के समय 1883 में 'इल्बर्ट बिलं विवाद सामने आया ।** जिसने भारतीयों को एकजुट होने के लिए प्रेरित किया । वस्तुतः इल्बर्ट **बिल के तहत भारतीयों को भी यूरोपियों का मुकदमा सुनने का अधिकार दिया** गया।
- किंतु **अंग्रेजों ने संगठित होकर इस बिल का विरोध किया जिसे खेत विद्रोह के नाम से जाना जाता** है। अतःरिपन को यह बिल वापस लेना पड़ा। इस बिल के विवाद से स्पष्ट हुआ कि ब्रिटिश अभी भी नस्लवादी नीति पर चल रहे हैं और संगठित होकर विरोध करने से अपनी मांगो को मनवाया जा सकता है।

कांग्रेस की स्थापना से पूर्व की संस्थाएँ : -

(1) सर्वप्रथम 1836 में बंग भाषा प्रकाशक सभा की स्थापना हुई।

(2) 1838 में बंगाल में "लैंड होल्डर्स सोसाइटी" की स्थापना हुई जो जमींदारों की संस्था थी।

(3) 1851 में "ब्रिटिश इंडियन एसो" की स्थापना हुई जिसके प्रथम अध्यक्ष राधा कांत देव थे जिन्होंने ब्रिटिश संसद को पत्र लिखकर अनुरोध किया कि उच्च वर्ग के अधिकारियों के वेतन में कमी की जाए तथा नमक शुल्क एवं 'जल शुल्क' में कमी की जाए।

(4) 1866 में ईस्ट इंडिया एसो० की स्थापना दादाभाई नैरोजी ने लंदन में की जिसका उद्देश्य भारत के लोगों की समस्याओं और मांगो से ब्रिटिश जनमत को परिचित कराना था। और इंग्लैण्ड में भारतीयों के पक्ष में जन समर्थन हासिल करना था।

(5) 1867 में पूना सार्वजनिक सभा की स्थापना रानाडे एवं गणेश वासुदेव जोशी ने की।

(6) 1875 में शिशिर कुमार घोष ने कलकत्ता में इंडिया लीग की स्थापना की।

(7) 1876 में सुरेन्द्र नाथ बनर्जी एवं आनंद मोहन बोस ने इंडियन एसो० की स्थापना की। इस संस्था को कांग्रेस की पूर्वगामी संस्था कहा जाता हैं ,सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने कहा कि यह संस्था संयुक्त भारत की अवधारणा पर आधारित है।

- इसकी प्रेरणा हमे मेजिनी के इटली के एकीकरण के आदर्शों से मिलती है। इंडियन एसो० की वार्षिक बैठक Dec. 1885 में कलकत्ता हुई जिसमें सुरेन्द्र नाथ बनर्जी शामिल थे। इसी कारण वे Dec .1885 में बॉम्बे में हो रहे कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन में शामिल नहीं पाए। इंडियन एसो० के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित थे :

(a) भारत में जनमत तैयार करना

(b) हिंदू-मुस्लिम जनसंपर्क बढ़ाना।

(c) सिविल सेवा का भारतीयकरण करना

- वस्तुतः इस परीक्षा के लिए उम्र सीमा में वृद्धि करना और भारत में भी परीक्षा आयोजित करना। इसके लिए ब्रिटिश सरकार के समक्ष अपना पक्ष रखने हेतु 'लाल मोहन घोष' को लंदन भेजा है गया ।

(8) 1884 में महास महाजन सभा की स्थापना वीर राघवाचारी, सुब्रमण्यम अय्यर एवं आनंद चारलू ने की।

कांग्रेस की स्थापना :

- कांग्रेस शब्द संयुक्त राज्य अमेरिका से लिया गया है जिसका अर्थ लोगों का समूह है। इसका आरंभिक नाम इंडियन नेशनल यूनियन रखा गया और प्रथम सम्मेलन पुणे में आयोजित करने की घोषणा की गई ।

- किंतु वहां प्लेग फैलने के कारण यह सम्मेलन बाम्बे में हुआ वहां प्लेग और दादा भाई नौरोजी के सुझाव पर इंडियन नेशनल कांग्रेस कर दिया गया।
- कांग्रेस का संस्थापक एक ब्रिटिश सेवानिवृत अधिकारी A.O. ह्यूम था। इसके प्रथम अध्यक्ष व्योमेश चन्द्र बनर्जी थे। इसमें 72 लोग सदस्य बने।
- **कांग्रेस के प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष बदरुद्दीन तैय्यब थे जो 1887 में मद्रास अधिवेशनमें अध्यक्ष बने।**

कांग्रेस की स्थापना के वास्तविक उद्देश्य:

देश के विभिन्न भागों के राष्ट्रवादी राजनीतिक कार्यकर्ताओं के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध विकसित करना।

- जाति, धर्म तथा प्रांतीय विभेदों को मिटाकर राष्ट्रीय एकता की भावना को विकसित करना।
- जनप्रिय मांगो को निरुपित कर उन्हें सरकार के सामने रखना।
- राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक मुद्दों पर देश में जनमत को प्रशिक्षित और संगठित करना।
- भविष्य के राजनीतिक कार्यक्रमों की रूपरेखा सुश्चित करना।
- भारत के प्रति अन्यायपूर्ण परिस्थितियों को खत्म करके भारत और ब्रिटेन के संबंधों को घनिष्ठ बनाना ।

कांग्रेस की स्थापना के संबंध में विवाद :

(i) सेफ्टी वाल्व सिद्धांत सुरक्षा कपाट सिद्धांत

- **इस सिद्धांत का प्रतिपादन लाला लाजपत राय ने किया।** उन्होंने ह्युम के जीवनी लेखक विलियम वेडरबर्न को आधार बनाकर अपनी अवधारणा 'यंग इंडिया' लेखों में प्रकाशित किया और कहा कि कांग्रेस लॉर्ड डफरिन के मस्तिष्क की उपज है।
- वस्तुतः भारतीय असंतोष को पहले ही जान लेने के लिए इस संस्था का गठन किया ।दरअसल लाला लाजपत राय ने कांग्रेस की यह आलोचना उसके उदारवादी नेतृत्व पर प्रहार करने के क्रम में की।

(ii) तड़ित चालक सिद्धांत

- **गोपाल कृष्ण गोखले ने इस सिद्धांत के तहत कांग्रेस की स्थापना को स्पष्ट करते हुए कहा कि सरकारी असंतोष से बचने के लिए भारतीय नेताओं ने ह्यूम का प्रयोग किया।**
- वस्तुतः कांग्रेस का संस्थापक यदि इस समय कोई अंग्रेज नहीं होता, तो आरंभ में ही यह संस्था ब्रिटिश दमन का शिकार हो सकती थी। अतः **ब्रिटिश दमन से बचने के लिए भारतीयों ने ह्यूम का नेतृत्व स्वीकार किया जो एक ब्रिटिश अधिकारी थे।**

समीक्षा / निष्कर्ष : -

- कांग्रेस की स्थापना के संदर्भ में सेफ्टी वाल्व सिद्धांत प्रमाणित नहीं होता क्योंकि वायसराय डफरिन को इसके गठन की सूचना बाद में मिली। साथ ही, ह्यूम एवं डफरिन के संबंध तनावपूर्ण थे।
- इतना ही नहीं डफरिन ने कांग्रेस की आलोचना करते हुए इसे मुट्ठी भर लोगों का समूह कहा। इस आधार पर इसे डफरिन के मस्तिष्क की उपज मानना तार्किक नहीं है। वस्तुतः कांग्रेस की स्थापना को ऐतिहासिक विकास के संदर्भ में समझे जाने की जरूरत है।
- कांग्रेस से पूर्व ही अनेक राजनीतिक संस्थाओं की स्थापना हो चुकी थी। राष्ट्रीय चेतना का प्रसार हो रहा था। ऐसे में भारतीय आशाओं एवं समस्याओंको एक मंच द्वारा प्रस्तुत करने के लिए अखिल भारतीय संगठन के रूप में कांग्रेस की स्थापना की गई।

उदारवादी आंदोलन

पृष्ठभूमि :-

- **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की आरंभिक राजनीति राष्ट्रीय आंदोलन में उदारवादी या नरमपंथी राजनीति के नाम जानी जाती है।**
- इसके प्रमुख नेता दादाभाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता, गोपाल कृष्ण गोखले, जे .घोषाल, बदरुद्दीन तैय्यब आदि थे।

विचारधारा:

- उदारवादी कांग्रेसी नेता ब्रिटिश न्यायप्रियता में विश्वास करते थे। अर्थात् ब्रिटिश संसद एवं जनता में इनका अटूट विश्वास था | अतः यह संवैधानिक मार्गो पर चलकर अधिकार प्राप्त करने पर बल देते थे।
- उदारवादियों का मानना था कि भारतीय जनता अशिक्षित है। अत :इसे आंदोलन शामिल नहीं करना चाहिए। इस तरह, भारत की आम जनता में इनका विश्वास नहीं था।
- **उदारवादियों का मानना था कि ब्रिटिश शासन भारत में एक वरदान है और यह भारत को धीरे-धीरे लोकतांत्रिक शासन की ओर ले जाएगा।** इसलिए उन्होनें कभी ब्रिटिश साम्राज्य से अलग होने की बात नहीं की। बल्कि ब्रिटिश साम्राज्य के अंतर्गत स्वशासन की प्राप्ति पर बल दिया।
- उदारवादियों का मानना था कि इंग्लैण्ड में मौजूद ब्रिटिश रूल बेहद प्रगतिशील है। वहाँ संसदीय शासन प्रणाली है जहाँ जनता के अधिकार सुरक्षित हैं नागरिकों को अपनी मांग रखने का अधिकार है, प्रेस की स्वतंत्रता है, आर्थिक प्रशासनिक स्तर पर नागरिकों के साथ कोई भेदभाव नहीं है, वैज्ञानिक तकनीकी शिक्षा मौजूद है।
- अतः इंग्लैण्ड का आर्थिक औद्योगिक विकास हो रहा है। इससे वहाँ के लोगों के जीवन में समृद्धि आ रही है। इस तरह इंग्लैण्ड में स्थापित ब्रिटिश रुल प्रगतिशील हैं, और यह लोक-कल्याण स्वरुप से युक्त हैं। जबकि भारत में भी ब्रिटिश नियंत्रण है।
- यहाँ ब्रिटिश अधिकारियों के होते हुए भी ब्रिटिश रूल की स्थापना नहीं की गयी है, यहाँ लोकतांत्रिक शासन नहीं है, प्रतिनिधि संस्थानों में भारतीयों ककी पर्याप्त भागीदारी नहीं

है। भारतीयों को नागरिक अधिकारों से वंचित रखा गया है। प्रेस पर सरकारी नियंत्रण है ।

- प्रशासनिक सेवाओं में भारतीय नागरिकों के साथ भेदभाव किया जाता है। वैज्ञानिक - तकनीकी शिक्षा का प्रसार नहीं है। ब्रिटिश नीतियों की वजह से भारत में कृषि का पिछड़ापन है।
- हस्तशिल्प उद्योगों का पतन हो गया है। अतः गरीबी, ऋणग्रस्तता और अकाल की बारंबारता मौजूद है। इससे भारतीय अर्थव्यवस्था एक ऋणग्रस्त एवं पिछड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में जानी जाती है। वस्तुतः इन सबका कारण भारत में अंग्रेजों द्वारा स्थापित अनब्रिटिश रूल है।

कार्यपद्धति :

- उदारवादी नेता ब्रिटिश जनमत को प्रभावित कर क्रमिक सुधारों पर बल देते थे। अतः उन्होंने लंदन में प्रचार कार्य पर बल दिया।
- उदारवादी नेता प्राथना पत्र, स्मरण -पत्र तथा विभिन्न लेखों के माध्यम से अपनी समस्याओं को प्रस्तुत कर समाधान की मांग करते थे। वस्तुतः उदारवादी संवैधानिक तरीके से अपनी मांग रखकर रक्तहीन संघर्ष में विश्वास करते थे।

मांगे

- भारतीय विधायिका में भारतीयों की संख्या बढ़ाई जाए।
- कनाडा और ऑस्ट्रेलिया के समान ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन भारत को स्वशासन दिया जाए।
- भेद-भाव मूलक शस्त्र अधिनियम की समाप्ति हो तथा सैन्य व्यय में कटौती की जाए एवं धन की निकासी रोका जाए।
- सिविल सेवा का भारतीयकरण किया जाए और इस परीक्षा के लिए उम्र तीमा में वृद्धि की जाए तथा परीक्षा भारत में आयोजित की जाए।
- स्थायी बंदोबस्त अन्य क्षेत्रों में लागू किया जाए।

मूल्यांकन

(a) योगदान : -

- आरंभिक राष्ट्रवादियों ने भारत में राजनीतिक जागरण का कार्य किया और भारतीयों को नेतृत्व प्रदान किया।
- लोकतंत्र एवं स्वशासन की विचारधारा को लोकप्रिय बनाया।
- उदारवादियों ने भारतीय बुद्धिजीवियों में यह भावना जागृत की कि ब्रिटिश शासन भारतीय हितों का विरोधी है। वस्तुतः उदारवादियों ने भारत में ब्रिटिश आर्थिक नीतियों" की समीक्षा प्रस्तुत कर उसके औपनिवेशिक चरित्र को उजागर किया।
- `दादा भाई नौरोजी जैसे आरंभिक राष्ट्रवादियों ने ब्रिटिश भू-राजस्व प्रबंधन की शोषणकारी पद्धतियों, हस्तशिल्प उद्योगों का पतन अर्थात् वि-औद्योगिकीकरण और रेलवे के माध्यम से भारत कीलूट एवं धन निकासी जैसी अवधारणाओं स्पष्ट किया और बताया कि ब्रिटिश नीतियों सेभारत में गरीबी और ऋण ग्रस्तता बढ़ रही ।
- इस आर्थिक समीक्षा का राष्ट्रीय आंदोलन प्रत्येक चरण में उपयोग किया गया । इस आर्थिक समीक्षा ने भारतीय बुद्धिजीवियों को ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध एकजुट किया।

(b) सीमाएँ :-

- उदारवादी आंदोलन शिक्षित मध्यवर्ग तक सीमित था । वस्तुतः उदारवादी आम जनता की शक्ति का आकलन करने में विफल रहे।
- उदारवादी लम्बे समय तक ब्रिटिश शासन के वास्तविक स्वरूप को नहीं समझ सके और ब्रिटिश न्यायप्रियता में विश्वास करते रहें।

निष्कर्ष :-

- इन सीमाओं के बावजूद भी उदारवादी आंदोलन को असफल नहीं कहा जा सकता। इसने भारतीयो में राष्ट्रीय चेतना का प्रसार किया। सबसे बढ़कर, ब्रिटिश आर्थिक नीतियों की समीक्षा कर भारत में अंग्रेजों द्वारा स्थापित अन-ब्रिटिश रूल को उजागर किया।

नरमपंथी / उदारवादी चरण / उग्रवादी आंदोलन

उग्रवादी आंदोलन

- ➢ पृष्ठभूमि
- ➢ उदय के कारण
- ➢ विचार धारा एवं कार्य पद्धति
- ➢ मूल्यांकन

पृष्ठभूमि :-

- कांग्रेस की स्थापना के 20 वर्षों बाद भी जब कोई विशेष राजनीतिक उपलब्धि भारतीयों को प्राप्त नहीं हुई तो उनमें निराशा फैली।
- इसी क्रम में, उग्रवादी चेतना का विकास हुआ जिसके प्रमुख नेता लाला लाजपत राय, विपिन चन्द्र पाल, अरविंद घोष आदि थे।

उदय के कारण :-

- ब्रिटिश शासन के वास्तविक स्वरूप की पहचान ने राष्ट्रीय चेतना को उग्र बनाया ।वस्तुतः आरंभिक राष्ट्रवादियों द्वारा ब्रिटिश शासन की आर्थिक समीक्षा प्रस्तुत किए जाने से उसका औपनिवेशिक चेहरा उजागर हो गया। अतः अब उससे न्याय की उम्मीद नहीं की जा सकती। इसलिए स्वयं के अधिकारों की प्राप्ति पर बल क्रम में उग्रवादी विचारधारा का उदय हुआ।
- ब्रिटिश सरकार ने तिलक पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया। फलत :भारतीय जनतामें असंतोष फैला। अतः ब्रिटिश विरोधी भावनाएँ उग्र हुई।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- इसी तरह ***अखिल भारतीय महिला सम्मेलन में इन युद्ध बंदियों को रिहा करने की मांग की गयी।*** साथ ही, सरकारी कर्मचारी एवं सेना के लोग भी सरकार के विरुद्ध हो गए। वे सरकार विरोधी सभाओं में जाते थे और चंदा भी देते थे।
- मुकदमे के संदर्भ में आंदोलन में भारतीय जनता के राष्ट्रवाद का परिपक्व रूप दिखाई पड़ा। वस्तुतः भारत बनाम इंग्लैण्ड का मुद्दा स्पष्ट हो गया और भारतीय का आंदोलन पूर्णतः आजादी के रंग में रंगने लगा। अतः सरकार ने भी घोषणा की कि उन्हीं कैदियों पर मुकदमा चलेगा जिस पर बर्बरता एवं हत्या का आरोप है।
- आजाद हिंद फौज के कैप्टन अब्दुल रशीद को 7 वर्ष की सजा दिए जाने के विरोध में प्रदर्शन हुआ जिसका नेतृत्व मुस्लिम लीग के छात्रों ने किया। इसमें कांग्रेस एवं कम्युनिस्ट पार्टी के छात्र संगठन भी शामिल हुए।

<u>शाही भारतीय नौसेना विद्रोह (18 फरवरी 1946)</u> - बाम्बे बंदरगाह पर खड़े हुए नौसैनिक प्रशिक्षण जहाज 'तलवार पर नाविकों ने ब्रिटिश नस्लवादी व्यवहार एवं सुविधाओं में कमी के मुद्दे पर ब्रिटिश सरकार का विरोध किया। इसी क्रम में नाविक पी.सी दत्त ने'तलवार' की दीवारों पर अंग्रेजों भारत छोड़ों लिख दिया।

- फलतः उन्हें गिरफ्तार किया गया। इसी क्रम में द शाही नौसेना के नाविकों ने सरकार से उन्हें रिहा करने की मांग की तो साथ ही आजाद हिंद फौज के बंदियों की रिहाई एवं इण्डोनेशिया से भारतीय सैनिकों के वापसी की मांग की शीघ्र ही यह विद्रोह अन्य जहाजों पर भी फैल गया और नाविकों ने सरकारी आदेश को मानने से इंकार कर दिया। यह विद्रोह 1857 के विद्रोह की याद ताजा करता हैं।
- वस्तुतः 1857 का विद्रोह भी नागरिक असंतोष को व्यक्त करता है जिसकी शुरुआत सैन्य छावनी से सैनिक असंतोष के रूप में हुई थी और इसमें सैनिकों के साथ-साथ बड़ी संख्या में असैनिक भी सम्मिलित राष्ट्रीय चेतना से मुक्त न होते हुए भी यह विद्रोह राष्ट्रीय चेतना के विकास में अपनी भूमिका निभाता है। इस दृष्टि से इसे प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की कोटि में रखा जाता है।
- इस विद्रोह के पश्चात् भारत से कम्पनी शासन की समाप्ति कर दी गयी और भारत में क्राउन का शासन स्थापित हुआ। अब सरकार ने अपनी नीतियों में परिवर्तन करते हुए विलय और विस्तार की नीति त्याग दिया। इस तरह सरकार की नीतियों में परिवर्तन के लिए 1857 का विद्रोह ऐतिहासिक मोड़ साबित हुआ।
- इसी तरह, शाही भारतीय नौसैनिक विद्रोह भी जन असंतोष की अभिव्यक्ति था। नस्लवादी व्यवहार एवं निम्न स्तर की सुविधाएँ इस विद्रोह का तात्कालिक कारण था। सैनिकों से शुरू हुए इस विद्रोह में जगह-जगह असैनिक समूह भी सरकार विरोधी कार्यक्रम में शामिल होते गए।
- यह विद्रोह राष्ट्रवाद की परिपक्व अवस्था को सूचित करता है। इस विद्रोह के उपरांत सरकार ने कैबिनेट मिशन माध्यम से भारतीयों द्वारा निर्मित एक संविधान सभा और अंतरिम सरकार के गठन की घोषणा की। तत्पश्चात् भारत की आजादी सामने आयी।
- इस तरह, यह विद्रोह ब्रिटिश शासन की समाप्ति अर्थात् ब्रिटिश साम्राज्यवाद के ताबूत में अंतिम कील साबित हुआ जिसमें प्रथम कील 1857 के विद्रोह ने लगायी थी।
- हड़ताली नाविकों ने केंद्रीय नौसेना हड़ताल समिति का गठन किया जिसके प्रमुख एम.एस.खान थे। नाविकों ने अपने जहाज पर कांग्रेस, मुस्लिम लीग, कम्युनिस्ट पार्टी के झंडे लगाए जो इस बात का संकेत है कि विद्रोह दल और सम्प्रदाय से ऊपर उठकर कार्य कर रहे थे। इन विद्रोहियों ने राजनीतिक कैदियों के रिहाई की मांग की।
- ***विद्रोह का प्रसार बाम्बे, कोलाबा (महाराष्ट्र), कराँची, कलकत्ता, जबलपुर दिल्ली, अम्बाला, जालंधर आदि स्थानों पर फैला। यहाँ मौजूद रक्षा संस्थानों में कर्मचारियों ने हड़ताल की। अंततः जिन्ना एवं पटेल के प्रयासों से नाविकों ने आत्मसमर्पण कर दिया। पटेल ने लिखा कि ब्रिटिश सैन्य ताकतें इतने जबरदस्त तरीके से जुटी है कि वे विद्रोहियों को पूर्णतः नष्ट कर सकती।***
- इस विद्रोह के दौरान आम जनता ने विद्रोहियों के पक्ष में एकजुटता प्रदर्शित की भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की इतिहास की पुस्तक में इस विद्रोह का उल्लेख चाहे ना मिलता हो किंतु इसकी भूमिका भारतीय जनमानस पर अंकित है।
- केन्द्रीय नौसेना हड़ताल समिति ने अपने अंतिम संदेश में कहा कि "हमारी हड़ताल हमारे राष्ट्र के जीवन की ऐतिहासिक घटना है। पहली बार सेना के जवानों एवं आम आदमी का खून एक साथ और एक लक्ष्य के लिए सड़कों पर बह रहा है। हम फौजी इसे कभी नहीं भूलेंगे। हमारी महान जनता जिंदाबाद।

<u>नौसेना विद्रोह का प्रभाव</u> : इस विद्रोह द्वारा जनता की निडरता एवं संघर्ष क्षमता की सशक्त अभिव्यक्ति हुई। विद्रोहियों को भारतीयों ने ब्रिटिश शासन की पूर्ण समाप्ति के रूप में देखा और इसे वे स्वतंत्रता दिवस की तरह मनाने लगे।

- इस विद्रोह ने ब्रिटिश सरकार को भारतीयों के समक्ष झुकने के लिए विवश किया। इसी क्रम में सरकार ने घोषणा की कि INA के उन्हीं बंदियों पर मुकदमा चलेगा जिन पर बर्बरता एवं हत्या का आरोप है। साथ ही, इण्डोनेशिया से भारतीय सैनिकों को वापस बुलाने की घोषणा की गयी एवं भारतीय मामलों पर विचार के लिए एक उच्च स्तरीय कैबिनेट मिशन भारत भेजा गया।

<u>कैबिनेट मिशन (मार्च 1946)</u>

- पृष्ठ भूमि प्रावधान
- मूल्यांकन

पृष्ठभूमि : - द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् ब्रिटेन की आर्थिक स्थिति कमजोर होने लगी थी। अतः उपनिवेशों पर पकड़ बनाए रखना सरकार के लिए चुनौतीपूर्ण हुआ ब्रिटेन में संसदीय चुनाव हुए और वहां लेबर 1945 मे पार्टी को बहुमत मिला और ऐटली प्रधानमंत्री बने।

- ब्रिटेन की नई सरकार ने आरंभ में यह स्पष्ट कर दिया कि वह भारतीय संवैधानिक समस्या को अतिशीघ्र सुलझाना चाहती है। चुनाव में सत्ता परिवर्तन से यह स्पष्ट हुआ कि ब्रिटिश जनता भी सरकार की नीतियों में परिवर्तन चाहती है।
- इसी क्रम में, ऐटली ने भारत के संदर्भ में कहा कि अल्पसंख्यकों की मांगें विचारणीय है किंतु उन्हें बहुसंख्यकों के हितों की उपेक्षा कर के पूरा नहीं किया जा सकता। यह ब्रिटिश सरकार के दृष्टिकोण में नीतिगत परिवर्तन को दर्शाता है।
- इसी क्रम में, ब्रिटिश सरकार ने 1946 में तीन सदस्यीय कैबिनेट मिशन भारत भेजने की घोषणा की। इसमें शामिल थे –

पेथिक लॉरेन्स-भारत सचिव

स्टेफर्ड क्रिप्स –व्यापार बोर्ड के अध्यक्ष

ए. वी. एलेक्जेंडर- ब्रिटिश नौसेना प्रमुख

- मार्च 1946 में कैबिनेट मिशन भारत पहुँचा और मई 1946 में उसने अपनी योजना प्रस्तुत की।

प्रावधान :- कैबिनेट मिशन के तहत एक भारतीय परिसंघ के निर्माण की योजना प्रस्तुत की गयी जिसमें सभी ब्रिटिश प्रांत और देशी रियासतें शामिल थी। तथा इस एकीकृत संघ को केवल रक्षा विदेशी मामलें एवं संचार के विषय दिए गए। अन्य सभी अधिकार प्रांतो को दिया गया।

- पाकिस्तान की मांग को अस्वीकार कर दिया गया क्योंकि मुस्लिम बहुल प्रांतों का एक अलग राष्ट्र के रूप में सम्मिलित होना संभव नहीं था। साथ ही, इससे नयी तरह की समस्याएँ बड़ी हो सकती थी जैसे- पंजाब के जालंधर एवं अम्बाला डिविजन में हिंदू और सिख बहुसंख्यक थे, अतः वे भी विभाजन की मांग कर सकते थे।
- इसी तरह, सशस्त्र सेनाओं का विभाजन भी खतरनाक हो सकता था। सबसे बढ़कर विभाजन से प्रशासनिक और आर्थिक समस्याएं बड़ी हो सकती थी जैसे-पाकिस्तान बनने से उसके पूर्वी और पश्चिमी भागों के मध्य संचार की समस्या।

सम्पूर्ण भारतीय प्रांतों को 3 समूहों में रखा गया। समूह A - इसमें बाम्बे मद्रास, संयुक्त प्रांत, मध्य प्रांत, बिहार और उड़ीसा शामिल थे। (हिंदु बहुसंख्यक) समूह3 - इसमें पंजाब, उत्तर पश्चिमी सीमा प्रांत और सिंध शामिल था। (मुस्लिम बहुसंख्यक)

समूह-C- इसमें बंगाल एवं असम शामिल था (मुस्लिम बहुसंख्यक)

- **संविधान सभा का गठन भारतीयों द्वारा किया जाएगा । इस संविधान सभा का निर्वाचन प्रांतों की विधानसभा के सदस्य करेंगे** और प्रांत की जनसंख्या के आधार पर सदस्य संख्या निर्धारित होगी । 10 लाख की जनसंख्या पर एक प्रतिनिधि रखा जाएगा ।
- संविधान लागू होते ही देशी राज्यों पर से ब्रिटिश सर्वोच्चता समाप्त हो जाएगी और यह रियासतें भारतीय संघ के साथ संधि करने के लिए स्वतंत्र होगी।
- एक अंतरिम सरकार का गठन होगा जिसमें 14 सदस्य होंगे। इसमें मुख्य राजनीतिक दल और सम्प्रदाय के लोग शामिल होंगे। (कांग्रेस-6 मुस्लिम लीग सिख इसाई और पारसी धर्म के 1-1 सदस्य रखे जाएंगे ।)
- मूल्यांकन : - द्विराष्ट्र बाद सिद्धांत की समस्या को सुलझाने अर्थात् हिन्दू -मुस्लिम मतभेद को सुलझाने का एक ईमानदार प्रयास कैबिनेट मिशन द्वारा की गया था ।
- भारतीय संघ की स्थापना का प्रस्ताव देश की एकता को बनाये रखने की कांग्रेस की मांग के अनुरूप था जबकि प्रांतों को दी गयी आंतरिक स्वायत्तता मुस्लिम लीग के दृष्टिकोण के नजदीक था । साथ ही **पाकिस्तान की मांग को अस्वीकार करना भारत विभाजन को रोकने की दिशा में उठाया गया एक सकारात्मक कदम था।**
- इतना ही नहीं, भारतीयों द्वारा अंतरिम सरकार का गठन तथा संविधान सभा का निर्माण करना एक सकारात्मक पहलु था। किंतु केन्द्र की शक्तियों को सीमित कर प्रांतों को अत्यधिक अधिकार दिया गया जो अलगाव की दिशा में एक कदम था।

प्रधानमंत्री एटली की घोषणा (20 फरवरी 1947)

- भारत में बढ़ते साम्प्रदायिक संघर्ष और ब्रिटिश राज पर बढ़ते दबाव ने प्रधानमंत्री एटली को इस घोषणा के लिए बाध्य किया कि 20 जून 1948 तक हर हाल में भारत को आजाद कर दिया जाएगा और इसके लिए माउंटबेटन को नया वायसराय बनाकर भारत भेजा गया।
- ऐटली ने कहा कि सभी राजनीतिक दल मिल जुल कर नए उत्तरदायित्व को स्वीकार करेंगे और अपने राजनीतिक मतभेद मुलाकर कार्य करेंगे ।
- इस घोषणा का मुस्लिम लीग और कांग्रेस ने स्वागत किया क्योंकि यह व्यवहारिक स्तर पर देश की वर्तमान स्थिति के अनुसार की गयी घोषणा थी।

माउंटबेटन योजना / मनबाटन योजना, डिकी बर्ड योजना / 3 जून की योजना (विभाजन के साथ हस्तांतरण की योजना): -

पृष्ठभूमि :-

- भारत में कैबिनेट मिशन ने पाकिस्तान की मांग को अस्वीकार कर दिया और एक अंतरिम सरकार तथा संविधान सभा के गठन की घोषणा की।
- अतः मुस्लिम लीग की पाकिस्तान की मांग अधूरी रह गयी। अतः उसने 16 अगस्त 1946 को प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस मनाने, लगे पाकिस्तान का नारा दिया जो साम्प्रदायिक हुए दंगों की प्रत्यक्ष उद्घोषणा थी । ऐसे में बड़ी संख्या में लोग मारे जाने लगे । देश में अव्यवस्था फैली।

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न, 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न, 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्तूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)

whatsapp - https://wa.link/wdvcfu 1 web.- https://bit.ly/40yVhHP

SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE